भारतीय सैन्य पद्धतियों के इतिहास का काल विभाजन
(Classification of Indian Military System)

भारतीय सैन्य इतिहास के विषय में सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि भारत में सभ्यता का विकास कब हुआ? इसके साथ ही यह भी कठिनाई है कि भारतीय युद्ध पद्धति के इतिहास का क्रम भी निर्धारित नहीं किया जा सकता, किन्तु फिर भी अध्ययन की सुगमता हेतु सम्पूर्ण भारतीय सैन्य इतिहास को निम्नलिखित प्रमुख भागों में बाँट सकते हैं—

(1) प्राचीन कालीन सैन्य पद्धति
(2) मध्यकालीन सैन्य पद्धति
(3) संक्रान्ति कालीन सैन्य पद्धति
(4) आधुनिक सैन्य पद्धति

(1) प्राचीन कालीन सैन्य पद्धति

इसका काल लगभग 1500 ई.पू. से 647 ई० पू० तक माना जाता है। इसे हम हिन्दू सैनिक पद्धति काल भी कह सकते हैं क्योंकि इसी काल में अनेक हिन्दू राज्यों एवं साम्राज्यों की स्थापना हुई। इस काल में भारतवासियों ने सभ्यता, संस्कृति एवं युद्ध कला में विदेशियों की अपेक्षा अधिक प्रगति की थी। इस काल में हम वैदिक काल से लेकर सम्राट हर्ष की मृत्यु के समय तक अध्ययन करते हैं। इस लम्बे काल में अनेक प्रकार की सैन्य युद्ध पद्धतियों के अध्ययन का विकास हुआ। अतः इन युद्ध पद्धतियों के अध्ययन की सुगमता हेतु इस काल को निम्नलिखित चार भागों में बाँट सकते हैं—

(अ) पूर्व ऐतिहासिक कालीन सैन्य पद्धति (3000 ई.पू. से 1500 ई.पू.)[2]
  (i) पाषाण युग
  (ii) नवीन पाषाण युग
  (iii) धातु युग
(ब) वैदिक कालीन सैन्य पद्धति (1500 ई.पू. से 600 ई.पू.)
(स) महाकाव्यकालीन सैन्य पद्धति (1800 ई.पू. से 200 ई.पू.)
(द) हिन्दू साम्राज्य कालीन सैन्य पद्धति (600 ई० पू० से 647 ई० तक)
  (i) मौर्य अथवा प्रथम मगध साम्राज्य काल (600 ई.पू. से 185 ई.पू.)
  (ii) गुप्त अथवा द्वितीय मगध साम्राज्य काल (320 ई. से 550 ई. तक)
  (iii) प्रथम कन्नौज अथवा हर्ष कालीन साम्राज्य काल (606 ई. से 647 ई. तक)

(2) मध्यकालीन सैन्य पद्धति

इसका काल लगभग 647 ई. से लेकर 1707 ई० तक माना जाता है। हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् उत्तरी भारत में अनेकों राज्यों की स्थापना हुई, परन्तु उनको एक शासन में गूंथने की शक्ति किसी में न थी। फलस्वरूप सम्पूर्ण देश में छोटे-छोटे स्वतन्त्र राजपूत राज्यों का उदय स्वाभाविक हो गया और इन राज्यों में सर्वोच्चता हेतु आपसी संग्राम प्रारम्भ हो गये। यदि एक तरफ वीरता का प्रदर्शन था तो दूसरी तरफ सैन्य संगठन, नेतृत्व, अस्त्र-शस्त्र और युद्ध कला में कोई उन्नति नहीं। राजपूत राजाओं के शासन काल में ही मुस्लिम आक्रमण के परिणामस्वरूप भारत में मुस्लिम शासन की नींव पड़ी और और शनैः-शनैः सम्पूर्ण भारत पर मुस्लिम शासकों का प्रभुत्व छा गया। प्रारम्भ में तुर्क, अफगान सुल्तानों का शासन था किन्तु बाद में मुगलों ने उनसे शासन स्वयं ले लिया। इस प्रकार विस्तृत अध्ययन की सुविधा के लिए हम मध्यकालीन सैन्य पद्धति को निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं—

Scanned by CamScanner

(i) राजपूत सैन्य पद्धति (647 ई. से 1206 ई.)
(ii) दिल्ली सल्तनत की सैन्य पद्धति (1206 ई. से 1526 ई.)
(iii) मुगल सैन्य पद्धति (1526 ई. से 1707 ई. तक)

(3) संक्रान्ति कालीन सैन्य पद्धति

इसका काल 1707 ई. से लेकर 1857 ई० तक माना जाता है। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् जब मुगल शक्ति बहुत तेजी से अस्त व्यस्त होने लगी, तब राजनैतिक विखण्डन की प्रवृत्ति प्रारम्भ हो गयी। मराठों और सिक्खों ने अपना प्रभुत्व जमाना प्रारम्भ कर दिया। इसमें भारतीय नरेशों ने अपनी-अपनी सेना को यूरोपीय ढंग से संगठित एवं प्रशिक्षित किया। उन्होंने पूर्व से चले आ रहे सैन्य संगठन, अस्त्र-शस्त्र और युद्ध कला का परित्याग पूर्णतः तो नहीं किया, किन्तु फिर भी कुछ क्षेत्रों में संशोधन हुए। इस युग को संक्रान्ति कालीन युग कहते हैं, क्योंकि इसमें मध्यकाल एवं आधुनिक काल की दोनों सैन्य पद्धतियों की विशेषताओं का संगम है। अतः इस काल को हम निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(i) मराठा सैन्य पद्धति
(ii) सिक्ख सैन्य पद्धति
(iii) ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेनायें।

(4) आधुनिक कालीन सैन्य पद्धति

इसका काल 1857 ई० से लेकर अब तक माना जाता है। 1857 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सत्ता को समाप्त कर भारत पर अंग्रेजों ने अपना शासन प्रत्यक्ष रूप से स्थापित कर लिया। इसके बाद भारतीय सेना में अनेकों परिवर्तन किये गये। सन् 1947 ई. में भारत के स्वतन्त्र होने के बाद भारतीय सेनाओं के संगठन आदि में अनेकों प्रकार के परिवर्तन किये गये हैं। आधुनिक सैन्य पद्धति के इतिहास काल को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(i) ब्रिटिश साम्राज्य कालीन सैन्य पद्धति
(ii) स्वतन्त्र भारतीय सैन्य पद्धति

प्राचीन भारतीय सैन्य पद्धतियों के अध्ययन के स्रोत
(Sources of study of Ancient Indian Military System)

किसी भी युग की सैन्य पद्धति के अध्ययन का स्रोत निम्नलिखित हो सकता है—

(1) साहित्य (2) पुरातत्व

(1) साहित्य

भारतीय विद्वानों ने यदि एक तरफ शुद्ध साहित्य के ग्रन्थों को लिखा है तो वहीं दूसरी तरफ अनेकों प्रकार की धार्मिक पुस्तकों की भी रचना की है और इनमें कहीं-कहीं सैन्य पद्धतियों का उल्लेख किया है। इतना ही नहीं अनेक प्रकार के कवच तथा अस्त्र-शस्त्र का भी उल्लेख नाम सहित इन ग्रन्थों में किया गया। साहित्यिक साक्ष्यों को निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(अ) धार्मिक साहित्य

(i) वैदिक साहित्य (ii) ब्राह्मण

Scanned by CamScanner

(iii) उपनिषद्
(iv) वेदान्त
(v) सूत्र ग्रन्थ
(vi) रामायण
(vii) महाभारत
(viii) पुराण
(ix) बौद्ध साहित्य
(x) जैन साहित्य

(ब) शुद्ध साहित्य—पाणिनि के अष्टाध्यायी पर लिखे गये पतंजलि के महाभाष्य से यवनों के आक्रमण का ज्ञान होता है।

कालिदास के नाटक 'रघुवंश' महाकाव्य, दर्पण विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस'। बाण भट्ट का 'हर्ष चरित्र' आदि शुद्ध साहित्य के अन्तर्गत आते हैं। इनसे प्राचीन सैन्य पद्धति की जानकारी होती है।

(स) ऐतिहासिक साहित्य—इसके अन्तर्गत **कौटिल्य** का 'अर्थशास्त्र', 'शुक्रनीतिसार', वैशम्पायन रचित 'नीति प्रकाशिका' आदि आते हैं। ये राजशास्त्र व्यवस्था के प्रमुख स्रोत हैं।

(द) विदेशी साहित्य अथवा यात्रा-साहित्य-

(i) ईरान यात्रा साहित्य
(ii) यूनानी तथा लैटिन साहित्य
(iii) चीनी साहित्य
(iv) अरबी एवं तुर्की साहित्य।

इन सभी के द्वारा भारतीय राजाओं की शासन पद्धति के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है।

(2) पुरातत्व

इससे मतलब उन सामग्रियों से है जो पृथ्वी के उत्खनन से प्राप्त होती हैं तथा जो अपनी भग्नावस्था में भी तत्कालीन सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सामरिक अवस्थाओं का परिचय देती हैं। इसे हम निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(अ) अभिलेख—प्राचीन समय में पत्थरों, ताम्रपत्रों, स्तम्भों, भवनों की दीवारों आदि पर लेख खुदवाये गये थे जो आज भी अपने उसी रूप में प्राप्त होते हैं, जिनसे प्राचीन सैन्य पद्धति की जानकारी प्राप्त होती है। जैसे अशोक के कलिंग अभिलेख से कलिंग विजय की जानकारी, हाथी गुफा के अभिलेखों से समुद्रगुप्त एवं खारबेल के विजय की जानकारी होती है। 'बोगेज कोई, (एशिया माइनर स्थित) के लेख से आर्यों के आक्रमणों का परिचय प्राप्त होता है।

(ब) सिक्के—प्राचीन भारतीय राजाओं के सिक्कों से उस समय की सैन्य पद्धति की जानकारी प्राप्त होती है। सिक्कों पर उत्कीर्ण राजाओं की वेश-भूषा अस्त्र-शस्त्रों के चिन्हों से उस काल की वेश-भूषा तथा हथियारों का बोध होता है। जैसे, समुद्रगुप्त के शासन काल के सिक्कों से उस समय की सैनिक वेश भूषा, अस्त्र-शस्त्र का परिचय मिलता है।

(स) प्राचीन स्मारक भग्नावशेष आदि—इनके द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के साथ ही साथ उस समय की किलेबन्दी तथा राज्य के बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा हेतु चारदीवारी का भी ज्ञान प्राप्त होता है। इनमें चित्रित चित्रों के द्वारा युद्ध कला, शिल्प कला, अस्त्र-शस्त्र आदि का भी परिचय मिलता है। ललित कला के अन्तर्गत मूर्तिकला, भवन निर्माण कला एवं चित्रकला का ज्ञान प्राप्त होता है। इतना ही नहीं बल्कि इनके द्वारा प्राचीन सैन्य पद्धतियों के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है।

Scanned by CamScanner

वैदिक कालीन सैन्य-पद्धति

विषय प्रवेश—सिन्धु घाटी की सभ्यता के काल के पश्चात् वैदिक युग आरम्भ होता है। इतिहासकारों के अनुसार लगभग 1500 ई० पू० से 600 ई० पू० तक का समय वैदिक युग कहलाता है। सिन्धु घाटी की सभ्यता काल के अन्त की ओर उत्तर-पश्चिम से आर्य जाति के लोग भारत में आने लगे। वे चरवाहों की टोलियों के रूप में भारत में पधारे। भारत में आने पर उन्हें यहाँ के पूर्व निवासियों से लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी। ज्यों-ज्यों आर्य युद्ध में विजयी होते गये त्यों-त्यों वे स्थायी रूप से भारत में बसते गये। इस काल में आर्यों तथा अनार्यों के बीच हुए युद्धों के अतिरिक्त विभिन्न आर्य जातियों में आपस में संघर्ष होते रहे।

भारत में स्थायी रूप से बस जाने के उपरान्त आर्यों ने उस समय की व्यवस्था तथा घटनाओं को गद्य तथा पद्य के रूप में व्यक्त करना आरम्भ कर दिया। इनका संग्रह वेदों के नाम से पुकारा जाने लगा। इन वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद माना जाता है। इसके बाद क्रमशः यजुर्वेद, सामवेद, अर्थववेद की रचना की गई। वेद आर्यों के द्वारा प्रारम्भ से मौखिक रूप में ही रचित किये गये थे, इसलिये इन्हें 'श्रुति' भी कहते हैं। वेदों के रूप में संग्रहित ज्ञान लिखित रूप लेने से पहले सैकड़ों वर्षों तक पीढ़ी को मौखिक रूप में ही कंठाग्र कराये जाते थे। वेदों में हमें उस समय के आर्यों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा नैतिक ज्ञान के अतिरिक्त यदा-कदा सैन्य-पद्धतियों का वर्णन भी मिलता है। प्राचीनतम् वेद ऋग्वेद में यत्र-तत्र सेना, अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध-कला आदि का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद की रचनाओं में हमें आर्यों द्वारा की गई लड़ाइयों का वर्णन भी मिलता है।

आर्य-अनार्यों का युद्ध—भारत में आने पर आर्यों ने जिन पूर्व निवासी भारतीय जातियों से युद्ध किया उन्हें अनार्य या दास कहा गया है। आर्यों के भारत में प्रवेश करने से पूर्व ये अनार्य भारत में स्थायी रूप से बसे हुए थे। उनके नगर-दुर्गों तथा परिकोटों से पूर्ण सुरक्षित थे। उन्होंने शस्त्रास्त्रों में भी काफी प्रगति की थी। आर्यों को इनसे अनेक वर्षों तक युद्ध करना पड़ा था। अनार्यों पर आक्रमण करने तथा उनके दुर्गों तथा सैनिकों को नष्ट करने का उल्लेख हमें ऋग्वेद में कई स्थानों पर मिलता है।

जब आर्य विजयी होकर भारत में स्थायी रूप से बस गये तो आर्य-जाति अनेक जातियों (जनों) में अलग-अलग विभाजित हो गयी। आगे चलकर इन जनों ने अधिकार क्षेत्र को बढ़ाने के प्रयत्न किये। धीरे-धीरे इन्होंने उत्तर भारत के विभिन्न भागों पर अपना अधिकार कर लिया और 'जन-राज्य' स्थापित कर लिये। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया इन जनों में विस्तारवादी प्रवृत्ति उत्पन्न हुई और इनमें आपस में भी युद्ध होने लगे। आक्रमण तथा सुरक्षा के दृष्टिकोण से ये संघों में भी संगठित होने लगे।

वैदिक काल में विरोधी जन-संघों में होने वाले अनेक युद्धों में **'दस राजाओं का युद्ध'** (दशराज्ञ युद्ध) विशेष प्रसिद्ध है। ऋगवेद में इस युद्ध का वर्णन मिलता है। परुस्नी (रावी) नदी के किनारे भारतवंश के राजा सुदास के नेतृत्व में भारत-जन ने दस राजाओं के संघ (प्रसन्धीय सेना) के विरूद्ध यह युद्ध किया था। अपनी प्रबल सैन्य-शक्ति एवं व्यूह रचना द्वारा सुदास ने सभी राजाओं को पराजित किया था और भारत का सर्वश्रेष्ठ सम्राट बन गया था।

सामाजिक संगठन और युद्ध—जैसा कि पहले बताया जा चुका है इस युग के आरम्भ से ही आर्यों को अनेक युद्ध करने पड़े। इन युद्धों में हमेशा कुशल सैनिकों की आवश्यकता पड़ती थी। भारतवर्ष के पूर्व निवासी भी युद्ध कार्यों में बहुत दक्ष रहे थे। स्थायी रूप से भारत में बस जाने के पश्चात् आर्यों ने अन्य कार्यों में भी विकास करना प्रारम्भ किया। वे

Scanned by CamScanner

अपने में से सैन्य कार्य में निपुण व्यक्तियों को ही सीमा की सुरक्षा का कार्य सुपुर्द करते थे। निरन्तर युद्धों के होते रहने के कारण ऐसे निपुण वर्ग की आवश्यकता अनुभव हुई जो युद्ध लड़ने में दक्ष हों। इस वर्ग के लोगों को 'क्षत्रिय' नाम से पुकारा जाने लगा। इस वर्ग के लोगों द्वारा ही मुख्यतः युद्ध लड़ा जाता था। आर्यों के भारत में आने से पूर्व सिन्धु घाटी की सभ्यता के काल में भी भारत के लोग चार वर्गों में विभाजित थे। आर्यों ने शायद इनका ही अनुसरण करके अपने को तीन वर्गों में विभाजित किया है जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य थे। आगे चलकर दस्युओं को मिलाकर चौथे वर्ग 'शुद्र' को बनाया गया होगा। यह वर्ग विभाजन शायद निरन्तर युद्ध के ही कारण हुआ। ऋगवेद में 'क्षत्रिय' का उल्लेख अनेक स्थानों में मिलता है। युद्ध तथा रक्षा का कार्य-भार क्षत्रिय वर्ग पर ही होता था। युद्ध और रक्षा का कार्य अन्य कार्यों से उच्च माना जाता था। क्षत्रिय लोगों को शासन प्रबन्ध का भी कार्य सौंपा जाता था। ब्राह्मण वर्ग शिक्षा-दीक्षा का कार्य करता और युद्ध-भूमि में राजा को सलाह देता था। वास्तव में वैदिक युग में सैनिक क्रिया इतनी महत्वपूर्ण हो गई थी कि उसका प्रभाव सामाजिक जीवन पर भी दृष्टिगोचर होने लगा था।

सेनानायक तथा राजा की उत्पत्ति—राजा के पद की स्थापना भी युद्धों के ही कारण हुई। युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिये उत्तम संगठन का होना आवश्यक था। उत्तम प्रकार का संगठन तभी हो सकता है जब संगठन का नायक योग्य हो। जो स्वयं वीर होने के साथ-साथ संगठन और प्रशासन के तत्वों को समझने वाला हो। अनार्यों के द्वारा जिनका युद्ध नेता भी होता था, पराजित होने के बाद आर्यों ने अपने में योग्य नेता की कमी को अनुभव किया। अन्त में सबने मिलकर एक राजा (नेता) का चुनाव किया। युद्ध काल में राजा का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व होता था। बिना राजा के युद्ध में विजय पाना कठिन होता था। ऋग्वेद में राजा को जन का गोप्ता और दुर्गों का भेदन करने वाला कहा गया है। इस प्रकार वैदिक युग में राजा सेना का मुख्य नायक माना जाने लगा।

सैन्य-संगठन—वेदों के अध्ययन से यह पता चलता है कि वैदिक-युग में राज्य की कोई अपनी स्थायी सेना नहीं होती थी। युद्ध के समय राजा को अपने स्थानीय सरदारों पर निर्भर रहना पड़ता था जो अपने साज-सज्जा और शस्त्रों के साथ युद्ध के लिये इकट्ठे हो जाते थे। ये क्षत्रिय कई कुल में विभक्त होते थे। वे अपने कुल के प्रधान नेता के नेतृत्व में एकत्रित होते थे। कभी-कभी वैश्य लोग भी युद्ध में भाग लेते थे। ब्राह्मण पुरोहित विजय के लिये वेद मन्त्रों का उच्चारण करते थे।

ऋग्वेद में सेना को पृत् या पृतना कहा गया है। इसमें पत्ति (पैदल सेना) और रथी (रथ सेना) मुख्य रूप से होती थीं। सेना में रथों को अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता था। वैदिक काल में रथ युद्ध का प्रमुख वाहन माना जाता था जिस पर विजय निर्भर करती थी। युद्ध में रथों के महत्व का विवरण ऐतरेय ब्राह्मण से प्राप्त होता है। रथों में 6 घोड़ों के जुते होने का विवरण ऋग्वेद में मिलता है। रथों पर आठ-आठ व्यक्तियों के बैठने के स्थान होते थे। उत्तर-वैदिक काल में अश्व तथा हाथियों के प्रयोग का भी वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में एक स्थान पर (10!106!6) यह विवरण मिलता है कि दो हाथी अपना सिर झुकाये हुए शत्रु की ओर दौड़ रहे हैं। इससे यह अनुमान किया जा सकता कि शायद वैदिक काल में हाथियों का भी प्रयोग हुआ हो; पर यह बहुत ही कम होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक काल में मुख्यतः पैदल सेना और रथ सेना होती थी और पैदल सेना की अपेक्षा रथ सेना का अधिक महत्व समझा जाता था।

सत्पथ ब्राह्मण में राजा के रत्नों के रूप में 'सेनानी' और 'सूत' का वर्णन मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि सेना भली-भाँति संगठित थी और एक उनका प्रधान सेनापति होता था, जिसे 'सेनानी' कहते थे।

Scanned by CamScanner

सेना में सैनिकों की संख्या के विषय में इस युग का निश्चयात्मक विवरण नहीं प्राप्त होता। इसलिये यह कहा नहीं जा सकता कि टुकड़ी में कम से कम कितने सैनिक होते थे। ऋग्वेद में एक स्थान पर 60,000; दूसरे स्थान पर 50,000 और तीसरे स्थान पर 30,000 सैनिकों के वध किये जाने का उल्लेख मिलता है। दशराज युद्ध में भी 66,066 सैनिकों के मारे जाने का विवरण मिलता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वैदिक-युग में सैनिकों की संख्या बहुत होती होगी।

अस्त्र-शस्त्र—इस युग में आक्रमणात्मक तथा सुरक्षात्मक दोनों ही प्रकार के शस्त्रों का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में शस्त्र सुसज्जित मरुतों का वर्णन करते हुए कहा गया है, कि वे सिर पर शिरस्त्राण, कंधे पर चर्म (ढाल) व वक्षस्थल पर वक्षस्त्राण, पांवों में पादमाण, हाथों के परशु, वर्च्छा व तीर-धनुष लिये हुये सुनहरे रथ पर आसीन थे, जिसमें घोड़े जुते हुए थे।

प्रागैतिहासिक काल से चले आ रहे धनुष-बाण का महत्व इस युग में भी कम न हुआ था। धनुष-बाण वैदिक युग के प्रमुख अस्त्र थे। दशराज युद्ध के वर्णन से हमें इस युग में प्रयोग किये जाने वाले शस्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। आर्य सैनिक धनुष-बाण से सुसज्जित होता था। उसका धनुष मजबूत डण्डे को टेढ़ा झुकाकर और दोनों सिरों को प्रत्यंचा से मिलाकर बनाया जाता था।

(1) धनुष; (2) बाण; (3) असि (तलवार); (4) परतला; (5) सृक्ति (भाला); (6) सृक (बल्लम); (7) दिधु (फेंककर चलाने वाला अस्त्र); (8) आद्रि या अशिनि; (9) कर्तन (कटार); और (10) सत (मुगदर)।

ऋगवेद में (7 ।75 ।15) विषाक्त बाण का भी उल्लेख है जिसका मुंह लोह मय होता था और अग्रभाग हिंसक। ऋग्वेद में इन्द्र के बज्र का वर्णन भी है। बज्र लोहे, सोने या हड्डी से बने होते थे। अर्थवेद में सीसे की गोलियों को छोड़ने वाले आग्नेय शस्त्रों का वर्णन भी मिलता है।

इस युग में धातु का प्रयोग बहुत उन्नति पर था। सैनिकों के शरीर के अंगों की रक्षा के लिये कवचों का निर्माण भी इस युग में किया जा चुका था। शिरस्त्राण (शीप्र) लोहे, ताँबे या सोने का बना हुआ होता था जो सिर और मुंह की रक्षा करता था। पदमाण चमड़े का बना होता था और तागे से घुटने तक बंधा होता था। कई धातुओं के टुकड़ों को एक साथ सी कर बनाया हुआ, कवच (वर्म) होता था। सैनिक के हाथों की धनुष की प्रत्यचा से रक्षा करने के लिये दस्ताना भी होता था।

दुर्ग, प्राकार आदि—सिन्धु घाटी की सभ्यता के समय से ही भारतीय अपनी सुरक्षा के लिये अपने नगरों तथा बस्तियों के चारों ओर परिखा तथा परिकोटा आदि बनाते थे। वे नगरों में दुर्गों का भी निर्माण करते थे ताकि शत्रु के आक्रमण से अपनी रक्षा कर सकें। वैदिक युग में हमें पूर्व की जातियों द्वारा निर्मित दुर्गों का विवरण मिलता है। आर्यों ने दुर्गों का निर्माण नहीं किया। उन्होंने वस्तुतः जिन दुर्गों पर अधिकार किया था उन्हीं को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। वे दुर्ग पत्थर और ईंटों के बने होते थे।

युद्ध-कला—वैदिक युग में युद्ध किस प्रकार किये जाते थे ? इसके विषय में हमें 'ऋग्वेद इन्ट्रोडक्शन' नामक पुस्तक से वर्णन प्राप्त होता है। जब शत्रु आर्यों की सीमा में पहुँचता था तो ईटों के टुकड़ों फेंके जाते थे। ईश्वर की स्तुति कर युद्ध गीतों के साथ सैनिक आगे बढ़ते थे। योद्धा रथों पर होते थे और पैदल सैनिक निकट से लड़ते थे। योद्धा कवच पहने हुए होते थे। शत्रु के दुर्गों को अग्नि से भी ध्वस्त किया जाता था। युद्ध क्षेत्र का चुनाव भी युद्ध की दृष्टि से किया जाता था।

युद्ध में वाद्ययन्त्रों का भी पर्याप्त प्रयोग होता था। यन्त्रों के शब्द घोष से अपनी सेना का उत्साह वर्धन तथा शत्रु-सेना के साहस को नष्ट किया जाता था। इस कार्य के लिये इस युग में दुन्दुभि और धौंसा नामक बाजों का प्रयोग किया जाता था।

Scanned by CamScanner